

गौरव गान



# विषय सूची

|     |   |   |
|-----|---|---|
| 1   | प्रेरणा   | 5 |
| 1.1 | शपथ लेना तो सरल है . . . . .                    | 5 |
| 1.2 | चरैवेति-चरैवेति, यही तो मंत्र है अपना . . . . . | 5 |



## अध्याय 1

# प्रेरणा

### 1.1 शपथ लेना तो सरल है

शपथ लेना तो सरल है  
पर निभाना ही कठिन है।  
साधना का पथ कठिन है  
साधना का पथ कठिन॥

है अचेतन जो युगों से  
लहर के अनुकूल बहते  
साथ बहना है सरल  
प्रतिकूल बहना ही कठिन है ॥१॥

शलभ बन जलना सरल है  
प्रेम की जलती शिखा पर।  
स्वयं को तिल-तिल जलाकर  
दीप बनना ही कठिन है ॥२॥

ठोकरें खाकर नियति की  
युगों से जी रहा मानव।  
है सरल आँसू बहना  
मुस्कुराना ही कठिन है ॥३॥

तप-तपस्या के सहारे  
इन्द्र बनना तो सरल है।  
स्वर्ग का ऐश्वर्य पाकर  
मद भुलाना ही कठिन है ॥४॥

### 1.2 चरैवेति-चरैवेति, यही तो मंत्र है अपना

चरैवेति-चरैवेति, यही तो मंत्र है अपना ।  
नहीं रुकना, नहीं थकना, सतत चलना सतत चलना ।  
यही तो मंत्र है अपना, शुभंकर मंत्र है अपना ॥ध्रु॥

हमारी प्रेरणा भास्कर, है जिनका रथ सतत चलता ।  
 युगों से कार्यरत है जो, सनातन है प्रबल ऊर्जा ।  
 गति मेरा धर्म है जो, भ्रमण करना भ्रमण करना ।  
 यही तो मंत्र है अपना, शुभंकर मंत्र है अपना ॥१॥

हमारी प्रेरणा माधव, है जिनके मार्ग पर चलना ।  
 सभी हिन्दू सहोदर हैं, ये जन-जन को सभी कहना ।  
 स्मरण उनका करेंगे और, समय दे अधिक जीवन का ।  
 यही तो मंत्र है अपना, शुभंकर मंत्र है अपना ॥२॥

हमारी प्रेरणा भारत, है भूमि की करें पूजा ।  
 सुजल-सुफला सदा स्नेहा, यही तो रूप है उसका ।  
 जिएं माता के कारण हम, करें जीवन सफल अपना ।  
 यही तो मंत्र है अपना, शुभंकर मंत्र है अपना ॥३॥

चरैवेति-चरैवेति, यही तो मंत्र है अपना ।  
 नहीं रुकना, नहीं थकना, सतत चलना सतत चलना ।  
 यही तो मंत्र है अपना, शुभंकर मंत्र है अपना ॥